www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सं. ....
तारीख ....

नागरिकों के स्तर पर राष्ट्र की प्रगति निर्भर

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नागरिकों के स्तर पर राष्ट्र की प्रगति निर्भर

किसी भी देश की प्रगति एवं समृद्धि इस बात पर निर्भर करती है कि वहाँ के नागरिकों का स्तर कैसा है। राष्ट्रीय विकास के लिए बनने वाली योजनाओं की अपनी उपयोगिता है पर उनकी सफलता नागरिकों की चरित्र निष्ठा के ऊपर निर्भर करती है। योजनाएं कितनी भी सशक्त एवं समर्थ क्यों न हों, उनकी सफलता तब तक संदिग्ध बनी रहेगी जब तक व्यक्तियों का नैतिक स्तर गिरा हुआ है अस्तु, समाज एवं देश की स्थायी प्रगति एवं समृद्धि के लिए सर्व प्रथम नैतिक आधारों को सुदृढ़ बनाना आवश्यक हो जाता है।

नैतिकता के अन्तर्गत वे सारे तत्व समाहित हैं जो व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में योगदान देते हों। श्रमशीलता, ईमानदारी, प्रामाणिकता उसके बाह्य पक्ष हैं, तो शालीनता, शिष्टता, उदारता, मिलन सारिता अन्तरंग। कोई व्यक्ति अपने काम के प्रति ईमानदार है पर सामाजिक एवं राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा कर रहा है तो उसे नीतिवान, चरित्रवान नहीं कहा जा सकता। नैतिकता समस्त समाज की बात सोचने, सबकी प्रगति के लिए तदनुरूप आचरण करने का ही पर्याय है, जो व्यक्तिगत परिधि तक सीमित न रहकर सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रेम के रूप में प्रस्फुटित होती है फलतः समग्र प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।

समाज एवं देश प्रेम का एक तूफानी झोंका बीसवीं सदी के आरम्भ में आया था। समाज सेवियों, अनुपम अविस्मरणीय त्याग-बलिदान का आदर्श प्रस्तुत करने वाले क्रान्तिकारियों, देश प्रेमियों की एक समर्थ एवं सशक्त टोली पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए उठ खड़ी हुई। असामान्य ही नहीं सामान्य व्यक्तियों के मन में भी देश प्रेम की लहरें हिलोरें ले रही थीं। सबने अपने-अपने स्तर पर प्रयास किया। फलतः सैकड़ों वर्षों से चली आ रही गुलामी की जंजीरें टूट कर छिन्न-भिन्न हो गईं और अंग्रेजों को भागना पड़ा। राष्ट्रीय चरित्र का, देश प्रेम का एक अनूठा और ऐतिहासिक उदाहरण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन दिनों प्रस्तुत हुआ जिसे बादकर आज भी रोमांच हो आता है।

प्रगति के लिए द्वितीय चरण उठाने की आवश्यकता थी। उत्कृष्टता का जो आवेग एवं आवेश उन दिनो प्रकट हुआ तथा स्वाधीनता का कारण बना, वह चिरन्तन रहा होता—नव निर्माण के प्रयासों में उसी प्रचन्ड वेग के साथ नियोजित रहा होता तो आज देश की स्थिति कुछ और ही होती। असमर्थता एवं अभाव ग्रस्तता का जो रोना पड़ रहा है यह स्थिति न आती। टालने के लिए, मन बहलाने के लिए कुछ भी बहाने बाजी की जा सकती है, कि देश में साधनों का अभाव है—अशिक्षा का प्रकोप है आदि अवगति के कारणों में एक सीमा तक इनका भी योगदान हो सकता है पर पूर्णतया इन्हें ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। इस तथ्य से कोई भी विचारशील इन्कार नहीं कर सकता कि पिछले कुछ दशकों में राष्ट्रीय चरित्र का बुरी तरह अवमूल्यन हुआ है। स्वतन्त्रता संग्राम में देश की कर्मठता, चरित्र निष्ठा, देश प्रेम की भावना जागी वह स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद एकाएक ही विलुप्त हो गई। नैतिक अवमूल्यन का प्रतिफल सामने आया। काम के प्रति अवमानना सामाजिक दायित्वों की उपेक्षा, कामचोरी, हरामखोरी की बढ़ती हुई प्रवृत्ति, अहमन्यता, अन्यमनस्कता प्रकारान्तर से नैतिक पतन की ही परिणति है जिसने देश के विकास में भारी अवरोध पैदा किया है।

भारत और जापान ने अपनी विकास यात्रा करीब-करीब एक साथ आरम्भ की है भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व था। द्वितीय विश्व-युद्ध में जकड़ा 'ग्रेट' ब्रिटेन भारत में बन रही परिस्थितियों एवं स्वयं की अन्तर्राष्ट्रीय उलझनों के कारण जहां भारत को १९४७ में स्वतन्त्र करने पर विवश हुआ, वहाँ जापान को भी इसी युद्ध में जर्मनी के साथी होने की परिणति के रूप में हिरोशिमा, नागाशाकी के आणविक बिस्फोट की प्रलय विभीषिका के उपरान्त अपना अभ्युत्थान नये सिरे से करना पड़ा। गत पैंतीस वर्षों में सारे विश्व ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। फिर भी जिस क्रम से इस छोटे से राष्ट्र जापान ने नैतिक एवं भौतिक दोनों ही दृष्टि से प्रगति की है, वह अनायास ही सबके लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन गई है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कलात्मक वस्तुएँ, तकनीकी सामान, मोटर पार्ट्स, घड़ी, रेडियो, इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में जापान विश्वभर में अग्रणी है। विश्व के प्रसिद्ध औद्योगिक राष्ट्रों में जापान का औद्योगिक उत्पादन सबसे अधिक है। प्रतिवर्ष ५-३ प्रतिशत की दर से उसमें अभिवृद्धि हो रही है। बेरोजगारी नहीं के बराबर है। मात्र कामयोग्य व्यक्तियों में से एक प्रतिशत बेकार हैं। वर्तमान में जापान विश्व में स्टील एवं मोटर का सबसे बड़ा उत्पादक है। दैनिक अंग्रेजी पत्र स्टेट्स मैन में पीटर हेजल हर्थ द्वारा प्रकाशित २८ दिसम्बर १९८० के एक आंकड़े के अनुसार वर्ष १९८० में जापान में १ करोड़ १० लाख मोटर कारें बनीं। यह संख्या अमेरिका के इस वर्ष के कुल उत्पादन से ३० लाख अधिक है। इस्पात का उत्पादन ११ करोड़ १७ लाख टन हुआ जो अमेरिका उत्पादन से १ करोड़ १७ लाख टन अधिक है। उल्लेखनीय है कि उनके निर्माण के लिए अधिकांश कच्चा माल बाहर से मँगाया जाता है।

मोटर साइकिल एवं इलेक्ट्रानिक कम्प्यूटर्स आदि के उत्पादन में भी जापान सभी देशों से आगे है। स्वीट्जरलैंड कभी घड़ियों के लिए प्रख्यात था किन्तु जापान ने उसकी यह ख्याति छीन ली है। स्वीट्जरलैंड की ८६७ कम्पनियों में जितनी घड़ियां बनती हैं उससे ९० लाख अधिक मात्र जापान की कम्पनियाँ बना देती हैं। विश्व भर में जितने जहाज बन रहे हैं उनका ४९ प्रतिशत जहाज बनाने का आर्डर अकेले जापान ने लिया है। फोटोग्राफी कैमरा अच्छे किस्म के जर्मनी में बनते थे किन्तु अपने पुरुषार्थ और मनोयोग के बलबूते जापान इस क्षेत्र में भी जर्मनी से कहीं आगे निकल गया। वर्ष १९८० में हवाई जहाज उद्योग एवं आधुनिकतम कम्प्यूटर तकनीक में भी जापान ने विश्व के सभी देशों को पीछे छोड़ दिया।

पीटर हेजल हर्थ ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि "निश्चित ही यह आश्चर्यजनक बात है कि विश्व की कुल जन संख्या का मात्र ३ प्रतिशत वाला देश जापान मात्र कुल भूभाग के दशमलव तीन प्रतिशत भूभाग पर बसा हुआ है किन्तु समूचे विश्व की १० प्रतिशत आर्थिक गतिविधियों का संचालन करता है। जापान की इस प्रगति को देखते हुए हडसन इन्स्टीट्यूट अमेरिका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के भविष्य विज्ञानी प्रो० हरमन कान ने भविष्यवाणी की है कि इस शताब्दी के अन्त तक जापान का व्यापार ४ लाख करोड़ रुपये तक पहुँच जायेगा।

जापान की इस चमत्कारी प्रगति के कारणों पर विचार करने पर एक ही तथ्य हाथ लगता है कि देश वासियों के उत्कृष्ट चरित्र ने ही उन्हें वर्तमान स्थिति तक पहुँचाया है। प्रामाणिकता, ईमानदारी, सहिष्णुता, श्रमशीलता की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी है। हर व्यक्ति व्यक्तिगत लाभ की तुलना में राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि महत्व देता है। प्रस्तुत बहुचर्चित घटना क्रमों में उनकी देश भक्ति स्पष्ट झलकती है।

अभी द्वितीय विश्वयुद्ध को बीते कुछ ही दिन हुए थे। जापानवासियों पर युद्ध ने जो कहर ढाया था उसकी क्षतिपूर्ति के लिए वे खून-पसीना एक कर रहे थे। एक अमेरिका फर्म के संचालक ने अपने फर्म में काम कर रहे जापानी श्रमिकों की सुविधा के लिए उनके श्रम के दिनों में कटौती करके काम के सप्ताह को छै दिनों के स्थान पर पाँच दिनों का कर दिया। दूसरे ही दिन अप्रत्याशित प्रतिक्रिया सामने आयी। सभी जापानी कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी। संचालक ने कारण का पता लगाया। कर्मचारी ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष ने सदस्यों द्वारा पारित किया गया प्रस्ताव फर्म के संचालक के समक्ष प्रस्तुत किया जिसमें प्रतिवेदन था कि "युद्ध ने हमारी आर्थिक व्यवस्था को नष्ट कर दिया है। हमें अपनी बिगड़ी स्थिति को सुधारने के लिए जी—तोड़ मेहनत करनी होगी। ऐसे में संचालक महोदय द्वारा श्रम के दिनों में कटौती कर दर्शाई गयी हमदर्दी हमारे देश की प्रगति के लिए हानिकारक है। अस्तु कृपया अपने निर्णय को वापिस लें और हमें उठने के लिए अधिक श्रम करने का मौका दें।' संचालक को अपना निर्णय वापिस लेना पड़ा। जिस देश के नागरिकों में देश प्रेम इतना उच्च स्तरीय हो भला वह देश पीछे कैसे रह सकता है।

समृद्धि की चोटी पर पहुँचने के बाद भी जापान के नागरिकों में देश भक्ति की भावना में किसी भी प्रकार कमी नहीं आयी है। हर व्यक्ति श्रम की अवमानना, कामचोरी, हरामखोरी को नैतिक अपराध मानता है। इन दिनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्वभर में अधिकारों की माँग एवं उनकी आपूर्ति के लिए सामूहिक हड़तालों का एक सिलसिला चल पड़ा है । कानूनी दृष्टि से निर्धारित नियमों के अन्तर्गत आने पर हड़तालों को वैध भी माना जाता है । इतने पर भी जापान की स्थिति सर्वथा भिन्न है । वहां लम्बी हड़तालों को नैतिक अपराध की श्रेणी में गिना जाता है ।

टोकियो के सूचीवेध विभाग में विश्व का सबसे आधुनिकतम प्लान्ट अवस्थित है जिसमें हजारों की संख्या में कर्मचारी काम करते हैं । इस प्रेस से आशीसम्बुन नामक प्रमुख समाचार पत्र का प्रकाशन होता है । १ करोड़ २० लाख प्रतियाँ प्रतिदिन प्रातः एवं सायं संस्करण के रूप में निकलती हैं । पत्र के प्रकाशक हैं–दाताशी कितनी । एक इन्टरव्यू में उनसे कर्मचारियों के हड़-ताल के विषय में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि विगत पाँच वर्षों में दो बार हड़ताल हुई थी । एक बार एक घन्टे की जिसमें कुछ भी नुकसान नहीं हुआ क्योंकि हड़ताल काम के घण्टों में नहीं हुई थी । दूसरी हड़ताल वर्ष १९७९ में कर्मचारी यूनियन द्वारा चाय की छुट्टी के समय में की गई जो मात्र १५ मिनट की थी । प्रकाशक के अनुसार इस पत्र का प्रकाशन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद कभी भी नहीं बन्द हुआ ।

२१ अप्रेल १९८१ के हिन्दुस्तान टाइम्स में एक व्यक्ति ने अपना एक रोचक संस्मरण लिखा था कि 'उन्हें जापान से भारत हवाई जहाज द्वारा वापिस लौटना था । जिस दिन का टिकट था उसी दिन सूचना मिली कि हवाई सेवा के कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी है । उन्हें चिन्ता हुई । पैसे भी समाप्त हो चले थे जिसके कारण अधिक दिनों तक रुकना संभव न था । सम्ब-न्धित अधिकारियों से पता लगाने पर आश्चर्यजनक बात मालूम हुई । अधि-कारियों ने बताया कि हमारे देश में दो दिनों से अधिक की हड़ताल नहीं होती । क्योंकि इससे देश को भारी क्षति उठानी पड़ती है । इससे भाई श्री दिनकर को प्रसन्नता हुई और साथ ही आश्चर्य भी । प्रसन्नता का कारण यह था कि हड़ताल दो दिनों से अधिक नहीं चलेगी । चिन्ता से मुक्ति मिली । आश्चर्य इस बात का था कि जापान के प्रतिव्यक्ति की औसत आय ८ हजार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डालर प्रतिवर्ष से भी अधिक है। सामान्यतः व्यक्तिगत आर्थिक क्षति अधिक न उठानी पड़े इसलिए हड़ताल समाप्त की जाती है पर जापान के कर्मचारियों के साथ तो ऐसी कोई मजबूरी न थी। वे चाहते तो अधिक दिनों तक हड़ताल चला सकते थे। निस्सन्देह यह जापान वासियों का देश के प्रति उत्कट आदर्श एवं प्रेम का परिचायक था। जिसके कारण हर व्यक्ति देश के प्रति अपने नैतिक दायित्वों को समझता एवं निर्वाह के लिए प्रयत्नशील रहता है।

एक ओर जापान वासियों के देश-प्रेम को देखकर हृदय गद्गद् हो उठता है वहीं दूसरी ओर अपने देश की स्थिति को देखकर भारी निराशा होती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के तैंतीस वर्षों बाद भी स्वावलम्बन की दिशा में आशा जनक एवं अपेक्षित प्रगति नहीं हुई है। प्रति व्यक्ति की औसत आय प्रतिवर्ष १२०० रुपये है। इस विषम स्थिति में भी यहाँ किसी भी सरकारी एवं गैर सरकारी विभाग में महीनों तक हड़ताल चलना एक सामान्य सी बात है। जापान में दो दिनों से अधिक हड़ताल चलाना देश के लिए हानिकारक समझा जाता है। जबकि हमारे यहाँ प्राप्त आंकड़ों के अनुसार वर्ष १७७९ में मात्र हड़ताल के कारण ४ करोड़ ३० लाख श्रमदिनों की क्षति हुई। अनुमानतः १९७९ में एक भी हड़ताल नहीं होती तो उसमें होने वाले लाभ से हजारों व्यक्तियों को रोजगार देने के साधन जुटा लिए जाते।

ये तो हड़ताल के कारण होने वाली क्षति के आंकडे हैं। बेमन से, आधे-अधूरे रूप में किए जाने से काम के स्तर एवं मात्रा दोनों में कमी आती है। कामचोरी की इस घातक मनोवृत्ति का भी लेखा-जोखा लिया जाय तो मालूम होगा कि हड़ताल से होने वाली क्षति की तुलना में इसकी क्षति कहीं अधिक है। बढ़ती हुई इस प्रवृत्ति से उत्पादन घटता तथा काम का स्तर गिरता है। फलतः व्यक्ति और समाज दोनों को ही समान रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। प्रगति का मार्ग अवरुद्ध होता है। जिस देश में समृद्धि के मूलभूत स्रोत 'श्रम' की अवमानना की जाती हो और काम न करना बड़प्पन का चिन्ह माना जाता हो उसकी प्रगति कैसे सम्भव है। अपने देश में पिछले दिनों यही घातक भूल होती रही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों को गौण मानकर उपेक्षा करने एवं व्यक्तिगत हितों को अत्यधिक महत्व देने की दुष्प्रवृत्ति की एक कड़ी और जुड़ जाने से संकीर्ण स्वार्थपरता को ही प्रोत्साहन मिला। शिष्टता, शालीनता के नागरिक नियमों की अवमानना तो एक सामान्य सी बात हो गई है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण रास्ते चलते हाट-बाजारों में, मोटर-रेलगाड़ी में सफर करते हुए देखा जा सकता है। अनुशासन हीनता एवं स्वेच्छाचार को स्वतन्त्रता का पर्याय समझने की दुष्प्रवृत्ति से सामाजिक सुव्यवस्था एवं सन्तुलन बुरी तरह डगमगा गया है।

इस तथ्य को भली भाँति हृदयंगम कर लेना चाहिए कि किसी भी देश के विकास में उपलब्ध भौतिक साधनों का उतना महत्व नहीं होता जितना कि नागरिकों के चारित्रिक स्तर का, विकास के लिए परिस्थितियाँ विपन्न होते हुए भी नागरिकों का नैतिक आधार सुदृढ़ हो और हर व्यक्ति देश एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों को सममझकर उनके निर्वाह के लिए जुट पड़े तो कोई कारण नहीं है कि प्रगति का पथ प्रशस्त न हो सके और पिछड़ेपन का अभाव ग्रस्तता का अभिशाप जुड़ा रहे। छोटे-छोटे देशों के ज्वलन्त उदाहरण हमारे सामने हैं। प्रकृति प्रदत्त साधनों की दृष्टि से, जलवायु की दृष्टि से उनकी स्थिति अपने देश से अधिक अच्छी नहीं है फिर भी वे द्रुतगति से आगे बढ़े हैं। जापान, इसराइल, स्वीडन, फिनलैंड, डेनमार्क जैसे छोटे-छोटे देशों की चन्द वर्षों में चमत्कारी प्रगति को देखते हैं तो उस सफलता के पीछे एक ही कारण नजर आता है कि वहाँ के निवासियों के उत्कृष्ट चरित्र, देश प्रेम की उदात्त भावना ने ही उन्हें वर्तमान स्थिति तक पहुँचाया है। इसके विपरीत अरब राष्ट्रों का उदाहरण हमारे सामने है कि प्रकृति प्रदत्त तेल का विपुल भाण्डार होते हुए वे सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़ी स्थिति में पड़े हुए हैं। सर्वाधिक आन्तरिक दंगे फसाद एवं संघर्ष आये दिन इन्हीं देशों में होते रहते हैं।

क्र. १७४ प्र० युग निर्माण योजना मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा। मू० ०.४० पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org